

उषा की कहानी

“उषा अपने मां बाप की एकलौती लड़की है, दिल्ली में रहती है। उषा के पिताजी जीवन शर्मा दिल्ली में ही एल आई सी में ऑफिसर थे और चार साल पहले स्वर्गवासी हो गये थे। उषा की मां श्रीमती रजनी हाऊस वाईफ़ है। उषा के और दो भाई भी हैं और उनकी शादी भी हो गई [...] ...”

Story By: guruji (guruji)

Posted: गुरुवार, दिसम्बर 18th, 2003

Categories: [रिश्तों में चुदाई](#)

Online version: [उषा की कहानी](#)

उषा की कहानी

उषा अपने मां बाप की एकलौती लड़की है, दिल्ली में रहती है। उषा के पिताजी जीवन शर्मा दिल्ली में ही एल आई सी में ऑफिसर थे और चार साल पहले स्वर्गवासी हो गये थे. उषा की मां श्रीमती रजनी हाऊस वाईफ़ है। उषा के और दो भाई भी है और उनकी शादी भी हो गई है।

उषा ने पिछले साल ही एम ए इंगलिश में पास किया है। उषा का रंग बहुत ही गोरा है और उसका फ़िगर 36-25-38 है। वो जब चलती है तो उसके कमर एक अजीब सी बल खाती है और चलते समय उसके चूतड़ बहुत हिलते हैं।

उसके हिलते हुए चूतड़ को देख कर पड़ोस के कई नौजवान, और बूढ़े आदमियों का दिल मचल जाता है और उनके लंड खड़े हो जाते है। पड़ोस के कई लड़कों ने काफ़ी कोशिश की लेकिन उषा उनके हाथ नहीं आई।

उषा अपनी पढ़ाई और युनिवरसिटी के संगी साथी में ही व्यस्त रहती थी।

थोड़े दिनों के बाद उषा की शादी उसी शहर के रहने वाले एक पुलिस ऑफिसर से तय हो गई।

उस लड़के के नाम रमेश था और उसके पिताजी का नाम गोविन्द था और सब उनको गोविन्दजी कहकर बुलाते थे। गोविन्द जी की पत्नी का नाम स्नेहलता है और वो एक लेखिका है। अब तब गिरिजा जी ने करीब 8-10 किताबे लिख चुकी है।

गोविन्द जी अपनी जवानी के दिनों में और अपनी शादी के बाद भी हर औरत को अपनी नज़र से चोदते थे और जब कभी मौका मिलता था तो उनको अपनी लौड़े से भी चोदते थे। गोविन्द जी बहुत चोदू है और अब तक वो अपने घर में कई लड़कियों और औरतों को चोद चुके थे और अब जब कि उनकी काफ़ी उमर हो गई थी मौका पाते ही कोई ना कोई औरत



को पटा कर अपना बिस्तर गर्म कराते थे।

गोविंदजी का लंड की लम्बाई करीब साढे आठ इन्च लम्बा और मोटाई करीब साढे तीन इन्च है और वो जब कोई औरत की चूत में अपना लंड डालते थे तो 25-30 मिनट के पहले वो झड़ते नहीं है। इसलिये जो औरत उनसे अपनी चूत चुदवा लेती है फिर दोबारा मौका पाते ही उनका लंड अपनी चूत में पिलवा लेती है।

आज उषा का सुहागरात है। परसों ही उसकी शादी रमेश के साथ हुई थी। उषा इस समय अपने कमरे में सज धज कर बैठी अपनी पति का इन्तज़ार कर रही है। उसकी पति कैसे उसके साथ पेश आयेगा, ये सोच सोच कर उषा का दिल जोर जोर से धड़क रहा है। सुहागरात में क्या क्या होता है, यह उसको उसकी भाभी और सहेलियों ने सब बता दिया था।

उषा को मालूम है कि आज रात को उसके पति कमरे में आ कर उसको चूमेगा, उसकी चुची को दबायेगा, मसलेगा और फिर उसके कपड़ों को उतार कर उसको नंगी करेगा। फिर खुद अपने कपड़े उतर कर नंगा हो जायेगा। इसके बाद, उसका पति अपने खड़े लंड से उसकी चूत की चटनी बनते हुए उसको चोदेगा।

वैसे तो उषा को चुदवाने का तजुरबा शादी के पहले से ही है। उषा अपने कॉलेज के दिनों में अपने क्लास के कई लड़कों का लंड अपने चूत में उतरवा चुकी है। एक लड़के ने तो उषा को उसकी सहेली के घर ले जा कर सहेली के सामने ही चोदा था और फिर सहेली कि गांड भी मारी थी।

एक बार तो उषा अपने एक सहेली के घर पर शादी में गई हुई थी। वहाँ उस सहेली के भाई, सुरेश, ने उसको अकेले में छेड़ दिया था और उषा की चुची दबा दिया। उषा ने तो सिर्फ मुसकुरा दिया था। फिर सहेली के भाई ने आगे बढ़ कर उषा को पकड़ लिया और चूम



लिया। तब उषा ने भी बढ कर सहेली के भाई को चूम लिया।

तब सुरेश ने उषा के ब्लाऊज के अन्दर हाथ डाल उसकी चुची मसलने लगा और उषा भी गर्म हो कर अपनी चुची मसलवाने लगी और एक हाथ से उसके पेण्ट के ऊपर से उसके लंड पर रख दिया। तब सुरेश ने उषा को पकड़ कर छत पर ले गया। छत पर कोई नहीं था, क्योंकि सारे घर के लोग नीचे शादी में व्यस्त थे।

छत पर जा कर सुरेश ने उषा को छत कि दीवार के सहारे खड़े कर दिया और उषा से लिपट गया। सुरेश एक हाथ से उषा कि चुची दबा रहा था और दूसरा हाथ साड़ी के अन्दर डाल कर उसकी बुर को सहला रहा था। थोड़ी देर में ही उषा गर्मा गई और उसके मुंह से तरह तरह कि आवाज निकलने लगी।

फिर जब सुरेश ने उषा कि साड़ी उतरना चाहा तो उषा ने मना कर दिया और बोली- नहीं सुरेश हमको एकदम से नंगी मत करो। तुम मेरी साड़ी उठा कर, पीछे से अपना गधे जैसा लंड मेरी चूत में पेल कर मुझे चोद दो।’

लेकिन सुरेश ना माना और उसने उषा को पूरी तरह नंगी करके उसको छत के मुंडेर से खड़े करके उसके पीछे जा कर अपना लंड उसकी चूत में पेल कर उसको खूब रगड़ रगड़ कर चोदा। चोदते समय सुरेश अपने हाथो से उषा कि चुची को भी मसल रहा था। उषा अपनी चूत कि चुदाई का बहुत मजा ले रही थी और सुरेश के हर धक्के के साथ साथ अपनी कमार हिला हिला कर सुरेश का लंड अपनी चूत में खा रही थी।

थोड़ी देर के बाद सुरेश उषा कि चूत चोदते चोदते झड़ गया। सुरेश के झड़ते ही उषा ने अपनी चूत से सुरेश का लंड निकल दिया और खुद सुरेश के सामने बैठ कर उसका लंड अपने मुंह में ले कर चाट चाट कर साफ़ कर दिया। थोड़ी देर के बाद उषा और सुरेश दोनों छत से नीचे आ गये।



आज उषा अपनी सुहागरात कि सेज पर अपनी कई बार की चुदी हुई चूत लेकर अपने पति के लिये बैठी थी। उसका दिल जोर जोर से धड़क रहा था क्योंकि उषा को डर था कि कहीं उसके पति को यह ना पता चल जाये कि उषा पहले ही चुदाई का आनन्द ले चुकी है। थोड़ी देर के बाद कमरे का दरवाजा खुला। उषा ने अपनी आंख तिरछी करके देखा कि उसके ससुरजी, गोविन्द जी, कमरे में आये हुए है। उषा का माथा ठनका, कि सुहागरात के दिन ससुरजी को क्या काम आ गया है।

खैर उषा चुपचप अपने आप को सिकोड़े हुये बैठी रही। थोड़ी देर के बाद गोविन्द जी सुहाग की सेज के पास आये और उषा के तरफ देख कर बोला- बेटी मैं जानता हूं कि तुम अपने पति के लिये इनतजार कर रही हो। आज के सब लड़के अपने पति का इन्तजार कराती है। इस दिन के लिये सब लड़कियों का बहुत दिनों से इन्तजार रहता है। लेकिन तुम्हारा पति, रमेश, आज तुमसे सुहागरात मनाने नहीं आ पायेगा। अभी अभी थाने से फोन आया था और वह अपनी यूनिफार्म पहन कर थाने चला गया। जाते जाते, रमेश यह कह गया कि शहर के कई भाग में डकैती पड़ी है और वोह उसकी छानबीन करने जा रहा है। लेकिन बेटी तू बिल्कुल चिन्ता मत करना। मैं तेरी सुहागरात खाली नहीं जाने दूंगा।'

उषा अपने ससुरजी की बात सुन तो लिया पर अपने ससुर कि बात उसके दिमाग में नहीं घुसी, और उषा अपना चेहरा उठा कर अपने ससुर को देखाने लगी। गोविन्द जी ने आगे बढ़ कर उषा को पलंग पर से उठा लिया और जमीन पर खड़े कर दिया।

तब गोविन्द जी मुसकुरा कर उषा से बोले- घबराना नहीं, मैं तुम्हारा सुहागरात बेकार जाने नहीं दूंगा, कोई बात नहीं, रमेश नहीं तो क्या हुआ मैं तो हूँ।'

इतना कह कर गोविन्द जी आगे बढ़ कर उषा को अपने बाहों में भर कर उसकी होठों पर चूम्मा दे दिया।

जैसे ही गोविन्द जी ने उषा के होठों पर चूम्मा दिया, उषा चौंक गई और अपने ससुरजी से



बोली- यह आप क्या कर रहे हैं। मैं तो आपके बेटे कि पत्नी हूं और उस लिहाज से मैं आप कि बेटी लगती हूं और आप मुझको चूम रहे हैं ?

गोविन्द जी ने तब उषा से कह- पागल लड़की, अरे मैं तो तुम्हारी सुहागरात बेकार ना जाये इसलिये तुमको चूमा। अरे लड़कियाँ जब शादी के पहले जब शिव लिंग पर पानी चढाते है तब वो क्या मांगती है ? वो मांगती है कि शादी के बाद उसका पति उसको सुहागरात में खूब रगड़े। समझी ?

उषा ने अपना चेहरा नीचे करके पूछा- मैं तो सब समझ गई, लेकिन सुहागरात और रगड़ने वाली बात नहीं समझी।' गोविन्द जी मुसकुरा कर बोले- अरे बेटी इसमे ना समझने कि क्या बात है ? तू क्या नहीं जानती कि सुहागरात में पति और पत्नी क्या क्या करते है ? क्या तुझे यह नहीं मालूम कि सुहागरात में पति अपने पत्नी को कैसे रगड़ता है ?

उषा अपनी सिर को नीचे रखती हुई बोली- हाँ, मालूम तो है कि पहली रात को पति और पत्नी क्या क्या करते और करवाते हैं। लेकिन, आप ऐसा क्यों कह रहे है ?

तब गोविन्द जी ने आगे बढ़ कर उषा को अपनी बांहों में भर लिया और उसके होठों को चूमते हुए बोले- अरे बहू, तेरा सुहागरात खाली ना जाये, इसलिये मैं तेरे साथ वो सब काम करूंगा जो एक आदमी और औरत सुहागरात में कराते हैं।

उषा अपनी ससुर के मुंह से उनकी बात सुन कर शर्मा गई और अपने हाथों से अपना चेहरा ढक लिया और अपने ससुर से बोली- यह बात आप कह रहे है। मैं आपके बेटे कि पत्नी हूं और इस नाते से मैं अपकी बेटी समान हूं और मुझसे आप ये क्या कह रहे है ?

तब गोविन्द जी अपने हाथो से उषा कि चुची को पकड़ कर दबाते हुए बोले- हाँ, मैं जानता हूं कि तू मेरी बेटी के समान है। लेकिन मैं तुझे अपने सुहागरात में तड़पते नहीं देख सकता और इसलिये मैं तेरे पास आया हूं।

तब उषा अपने चेहरे से अपना हाथ हटा कर बोली- ठीक है बाबूजी, आप मेरे से उमर में



बड़े हैं। आप जो ही कह रहे हैं, ठीक ही कह रहे हैं। लेकिन घर में आप और मेरे सिवा और भी तो लोग हैं।

उषा का इशारा अपने सासू मां के लिये था।

तब गोविन्द जी ने उषा कि चुची को अपने हाथों से ब्लाऊज के ऊपर से मलते हुए कहा- उषा तुम चिंता मत करो। तुम्हारी सासू मां को सोने से पहले दूध पीने की आदत है, और आज मैंने उनको दूध में दो नींद की गोली मिला कर उनको पिला दिया है। अब रात भर वो आराम से सोती रहेंगी।

तब उषा ने अपने हाथों से अपने ससुरजी की कमर पकड़ते हुए बोली- अब आप जो भी करना है कीजिए, मैं मना नहीं करूंगी।

तब गोविन्द जी उषा को अपने बाहों में भींच लिया और उसके मुंह को बेतहाशा चूमने लगे और अपने दोनों हाथों से उसकी चुची को पकड़ कर दबाने लगे। उषा भी चुप नहीं थी। वो अपने हाथों से अपने ससुर का लंड उनके कपड़े के ऊपर से पकड़ कर मुठ मार रही थी। गोविन्द जी अब रुकने के मूड में नहीं थे, उन्होंने उषा को अपने से अलग किया और उसकी साड़ी का पल्लू को कंधे से नीचे गिरा दिया। पल्लू को नीचे गिराते ही उषा की दो बड़ी बड़ी चुची उसके ब्लाऊज के ऊपर से गोल गोल दिखाने लगी। उन चुची को देखते ही गोविन्द जी उन पर टूट पड़े और अपना मुंह उस पर रगड़ने लगे।

उषा कि मुंह से ओह! ओह! अह! क्या कर रहे हो की आवाजे आने लगी।

थोड़ी देर के बाद गोविन्द जी ने उषा कि साड़ी उतार दिया और तब उषा अपने पेटिकोट पहने ही दौड़ कर कमरे का दरवाजा बंद कर दिया। लेकिन जब उषा कमरे कि लाईट बुझाना चाहा तो गोविन्द जी ने मना कर दिया और बोले- नहीं बत्ती मत बंद करो। पहले दिन रोशनी में तुम्हारी चूत चोदने में बहुत मजा आयेगा।'



उषा शर्मा कर बोली- ठीक है मैं बत्ती बंद नहीं करती, लेकिन आप भी मुझको बिल्कुल नंगी मत कीजियेगा ।’

‘अरे जब थोड़ी देर के बाद तुम मेरा लंड अपनी चूत में पिलवाओगी तब नंगी होने में शरम कैसी । चलो इधर मेरे पास आओ, मैं अभी तुमको नंगी कर देता हूँ ।’ उषा चुपचाप अपना सर नीचे किये अपने ससुर के पास चली आई ।

जैसे ही उषा नज़दीक आई, गोविन्द जी ने उसको पकड़ लिया और उसके ब्लाऊज के बटन खोलने लगे । बटन खुलते ही उषा कि बड़ी बड़ी गोल गोल चुची उसके ब्रा के उपर से दिखाने लगी । गोविन्द जी अब अपना हाथ उषा के पीछे ले जकर उषा कि ब्रा का हुक भी खोल दिया । हुक खुलते ही उषा कि चुची बाहर गोविन्द जी के मुंह के सामने झूलने लगी । गोविन्द जी ने तुरंत उन चुची को अपने मुंह में भर लिया और उनको चूसने लगे । उषा कि चुची को चूसते चूसते वो उषा कि पेटिकोट का नाड़ा खींच दिया और पेटिकोट उषा के नितम्बों से सरकते हुए उषा के पैर के पास जा गिरा । अब उषा अपने ससुर के समने सिर्फ अपने पेण्टी पहने खड़ी थी । गोविन्द जी ने झट से उषा कि पेण्टी भी उतर दी और उषा बिल्कुल नंगी हो गई । नंगी होते ही उषा ने अपनी चूत अपने हाथो से छुपा लिया और शरमा कर अपने ससुर को कनखियों से देखाने लगी । गोविन्द जी नंगी उषा के सामने जमीन पर बैठ गये और उषा कि चूत पर अपना मुंह लगा दिया । पहले गोविन्द जी अपने बहू कि चूत को खूब सूंघा । उषा कि चूत से निकलती सौंधी सौंधी खुशबु गोविन्द जी के नाक में भर गई । वो बड़े चाव से उषा कि चूत को सूंघने लगे । थोड़ी देर के बाद उन्होंने अपना जीव निकल कर उषा कि चूत को चाटना शुरू कर दिया । जैसे ही उनका जीव उषा कि चूत में घुसा, तो उषा जो कि पलंग के सहारे खड़ी थी, पलंग पर अपनी चूतड़ टिका दिया और अपने पैर फैला कर अपनी चूत अपनी ससुर से चटवाने लगी । थोड़ी देर तक उषा कि चूत चाटने के बाद गोविन्द जी अपना जीव उषा कि चूत के अन्दर डाल दिया और अपनी जीव को घुमा घुमा कर चूत को चूसने लगे । अपनी चूत चाटने से उषा बहुत गर्म हो



गई और उसने अपने हाथों से अपनी ससुर का सिर पकड़ कर अपनी चूत में दबाने लगी और उसके मुंह से सी सी की आवाजे निकलने लगी ।

अब गोविन्द जी उठ कर उषा को पलंग पर पीठ के बल लेटा दिया । जैसे ही उषा पलंग पर लेटी, गोविन्द जी झपट कर उषा पर चढ़ कर बैठ गये और अपने दोनों हाथों से उषा कि चुची को पकड़ कर मसलने लगे । गोविन्द जी अपने हाथों से उषा कि चुची को मसाल रहे थे और मुंह से बोल रहे थे- मुझे मालूम था कि तेरी चुची इतनी मस्त होगी । मैं जब पहली बार तुझको देखाने गया था तो मेरा नज़र तेरी चुची पर ही थी और मैंने उसी दिन सोच लिया था इन चुची पर मैं एक ना एक दिन जरूर अपना हाथ रखूंगा और इनको रगड़ रगड़ कर दबाऊंगा । 'हाय ! अह ! ओह ! यह आप क्या कह रहे है ? एक बाप होकर अपने लड़के के लिये लड़की देखते वक्त आप उसकी सिर्फ चुची को घूर रहे थे । छ्ठी : कितने गन्दे है आप' उषा मचलती हुई बोली । तब गोविन्द जी उषा को चूमते हुए बोले- अरे मैं तो गन्दा हूं ही, लेकिन तू क्या कम गन्दी है ? अपने ससुर के सामने बिल्कुल नंगी पड़ी हुई है और अपनी चुची को ससुर से मसलवा रही है ? अब बता कौन ज्यादा गन्दा है, मैं या तू ?' फिर गोविन्द जी ने उषा से पूछा- अच्छा यह बाता कि चुची मसलने से तेरा क्या हाल हो रहा है ?' उषा अपने ससुर से लिपट कर बोली- 'ऊऊहहहह और जोर से हाँ, ससुरजी और जोर से दबाओ बड़ा मजा आ रहा है मुझे, अपना हाथ औरतों की चुची से खेलने में बहुत ही माहीर है । आपको पता है कि औरतों की चुची कैसे दबाया जाता है । और जोर से दबाईये, मुझे बहुत मजा आ रहा है ।

फिर उषा अपने ससुर को अपने हाथों से बांधते हुए बोली- अब बहुत हो गया है चुची से खेलना । आपको इसके आगे जो भी करने वाले हैं जल्दी कीजिये, कहीं रमेश ना आ जाये और मेरी भी चूत में खुजली हो रही है ।' 'अभी लो, मैं अभी तुझको अपने इस मोटे लंड से चोदता हूं । आज तुझको मैं ऐसा चोदुंगा कि तु जिंदगी भर याद रखेगी' इतना कह कर गोविन्द जी उठकर उषा के पैरों के बीच उकड़ हो कर बैठ गये ।



ससुर जी को अपने ऊपर से उठते ही उषा ने अपनी दोनों टांगों को फैला कर ऊपर उठा लिया और उनको घुटने से मोड़ कर अपना घुटना अपने चुची पर लगा लिया। इसासे उषा कि चूत पूरी तरह से खुल कर ऊपर आ गई और अपने ससुर के लंड अपनी चूत को खिलाने के लिये तैयार हो गई। गोविन्द जी भी उठ कर अपना धोऽति उतार, चड्डी, कुरता और बनियान उतार कर नंगे हो गये और फिर से उषा के खुले हुए पैरो के बीच में आकर बैठ गये। तब उषा उठ कर अपने ससुर का तनतनाया हुआ लंड अपने नाजूक हाथों से पकड़ लिया और बोली- ऊओह्ह्ह्ह्ह ससुरजी कितना मोटा और सख्त है अपना यह।' गोविन्द जी तब उषा के कान से अपना मुंह लगा कर बोले- मेरा क्या ? बोल ना उषा, बोल' गोविन्द जी अपने हाथों से उषा कि गदराई हुई चुची को अपने दोनों हाथों से मसाल रहे थी और उषा अपने ससुर का लंड पकड़ कर मुट्ठी में बांधते हुए बोली- आआअह्ह ऊओफ़फ़ ऊईईइम्म म्ममाआ ऊऊह्ह्ह्ह ऊऊउह्ह्ह !आपका यह पेनिस स्सास्सह्ह ऊऊम्माआह।' गोविन्द जी फिर से उषा के कान पर धीरे से बोले- उषा हिन्दी में बोलो ना इसका नाम प्लीज'। उषा ससुर के लंड को अपने हाथों में भर कर अपनी नज़र नीची कर के अपने ससुर से बोली- मैं नहीं जानती, आप ही बोलीए ना, हिन्दी में इसको क्या कहते हैं।' गोविन्द जी ने हंस कर उषा कि चुची को चूसते हुए बोले- अरे ससुर के सामने नंगी बैठी है और यह नहीं जानती कि अपने हाथ में क्या पकड़ रखी है ? बोल बेटी बोल इसको हिन्दी में क्या कहते और इसासे अभी हम तेरे साथ क्या करेंगे।'।

तब उषा ने शर्मा कर अपने ससुर के नगी छ्ती में मुंह छुपाते हुए बोली- ससुर जी मैं अपने हाथों से आपका खड़ा हुआ मोटा लंड पकड़ रखा है, और थोड़ी देर के बाद आप इस लंड को मेरी चूत के अन्दर डाल कर मेरी चुदाई करेंगे। बस अब तो खुश है न आप। अब मैं बिल्कुल बेशरम होकर आपसे बात करुंगी।

इतना सुन कर गोविन्द जी ने तब उषा को फिर से पलंग पर पीठ के बल लेटा दिया और अपने बहू की टांगो को अपने हाथों से खोल कर खुद उन खुली टांगो के बीच बैठ गये।



बैठने के बाद उन्होंने झुक कर उषा कि चूत पर दो तीन चूम्मा दिया और फिर अपना लंड अपने हाथों से पकड़ कर अपनी बहू कि चूत के दरवाजे पर रख दिया ।

चूत पर लंड रखते ही उषा अपनी कमार उठा उठा कर अपनी ससुर के लंड को अपनी चूत में लेने की कोशिश करने लगी । उषा कि बेताबी देख कर गोविन्द जी अपने बहू से बोले- रुक छिनाल रुक, चूत के सामने लंड आते ही अपनी कमार उचका रही है । मैं अभी तेरे चूत कि खुजली दूर करता हूं ।

उषा तब अपने ससुर के छाती पर हाथ रख कर उनकी निप्पले के अपने अंगुलियों से मसलते हुए बोली- ऊऊहूहह ससुरजी बहुत हो गया है । अब बार्दाशत नहीं हो रहा है आओ ना ऊऊओहूहह प्लीज ससुरजी, आओ ना, आओ और जल्दी से मुझको चोदो । अब देर मत करो अब मुझे चोदो ना और कितनी देर करेंगे ससुरजी । ससुर जी जल्दी से अपना यह मोटा लंड मेरी चूत में घुसेड़ दीजिये । मैं अपनी चूत कि खुजली से पागल हुए जा रही हूं । जल्दी से मुझे अपने लंड से चोदिये । अह ! ओह ! क्या मस्त लंड है आपका ।

गोविन्द जी अपना लंड अपने बहू कि चूत में डेलते हुए बोले- वाह रे मेरी छिनाल बहू, तू तो बड़ी चुदकड़ है । अपने मुंह से ही अपने ससुर के लंड की तारीफ़ कर रही है और अपनी चूत को मेरा लंड खिलाने के लिये अपनी कमार उचका रही है । देख मैं आज रात को तेरे चूत कि क्या हालत बनाता हूं । साली तुझको चोद चोद कर तेरी चूत को भोसड़ा बना दूंगा !

और उन्होंने एक ही झटके के साथ अपना लंड उषा कि चूत में डाल दिया ।

चूत में अपने ससुर का लंड घुसते ही उषा कि मुंह से एक हलकी सी चीख निकल गई और उसने अपने हाथों से अपने ससुर को पकड़ उनका सर अपनी चुची से लगा दिया और बोलने लगी- वाह ! वह ससुर जी क्या मस्त लंड है आपका । मेरी तो चूत पूरी तरह से भर गई । अब जोर जोर से धक्का मार कर मेरी चूत कि खुजली मिटा दो । चूत में बहुत खुजली



हो रही है।’

‘अभी लो मेरे चिनल चुदकड़ बहू, अभी मैं तेरी चूत कि सारी कि सारी खुजली अपने लंड के धक्के के साथ मिटाता हूँ’ गोविन्द जी कमार हिला कर झटके के साथ धक्का मारते हुए बोले।

उषा भी अपने ससुर के धक्के के साथ अपनी कमर उछाल उछाल कर अपनी चूत में अपने ससुर का लंड लेते बोली- ओह! अह! अह! ससुरजी मजा आ गया। मुझे तो तारे नज़र आ रहे हैं। आपको वाकई में औरत कि चूत चोदने कि कला आती है। चोदिए चोदिए अपने बहू कि मस्त चूत में अपना लंड डाल कर खूब चोदिए। बहुत मजा मिल रहा है। अब मैं तो आपसे रोज़ अपनी चूत चुदवाऊँगी। बोलीये चोदेंगे ना मेरी चूत ?

गोविन्द जी अपनी बहू की बात सुन कर मुसकुरा दिये और अपना लंड उसकी चूत के अन्दर बाहर करना जारी रखा। उषा अपनी ससुर के लंड से अपनी चूत चुदवा कर बेहाल हो रही थी और बड़बड़ा रही थी- आआह्हहहह ससुरजीईए जोरर सीई। हन्नन्न सासुरजीए जूररर जूररर से धक्ककाअ लगीईई, औरर जोरर सीई चोदिईईए अपनी बहू की चूत को। मुझीई बहुत्त अस्सह्हहाअ लाअगग रह्हहहाअ हैईई, ऊऊओह्हह और जोर से चोदो मुझे आआह्हह सौऊरररजीए और जोर से करो आआह्हह और अन्दर जोर से। ऊऊओह्हहह दीआररर ऊऊओह्हह ऊऊफ़फ़ आआह्ह आआह्हह ऊउईई आह्हहह ऊम्मम्माआह्हह ऊऊह्ह।’

थोड़ी देर तक जोर जोर के धक्को से अपने बहू की चूत चोदने के बाद गोविन्द जी ने अपना धक्को की रफ़्तार धीमी कर दिया और उषा की चुची को फिर से अपने हाथों में पकड़ कर उषा से पूछा- बहू कैसा लग रहा है अपने ससुर का लंड अपनी चूत में पिलवा कर ? तब उषा अपनी कमर उठा उठा कर चूत में लंड की चोट लेती हुई बोली- ससुरजी अपसे चूत चुदवा कर मैं और मेरी चूत दोनों का हाल ही बेहाल हो गया है। आप चूत चोदने में



बहुत एक्सपर्ट है बड़ा मजा आ रहा है मुझे ससुरजी, ऊओह्ह्ह्ह्ह ससुरजी आप बहुत अच्छा चोदते है आआह्ह्ह्ह ऊऊह्ह्ह्ह । ऊऊओफ़फ़ ससुरजी आप बहुत ही एक्सपर्ट है और आपको औरतों कि चूत चोद कर औरतों को सुख देना बहुत अच्छी तरह से आता है । मुझे बहुत अच्छा लग रहा है यूं ही हाँ, ससुर जी यूं ही चोदो मुझे आप बहुत अच्छे हो बस यूं ही चुदाई करो मेरी ऊओह्ह्ह्ह्ह खूब चोदो मुझे ।

गोविन्द जी भी उषा की बातों को सुन कर बोले- ले रण्डी, छिनाल ले अपने चूत में अपने ससुर का लंड का ठोक कर ले । आज देखते है कि तू कितनी बड़ी छिनाल चुदकड़ है । आज मैं तेरी चूत को अपने हलवी लंड से चोद चोद कर भोसड़ा बना दूंगा । ले मेरी चुदकड़ बहू ले मेरा लंड अपनी चूत में खा ।

गोविंद जी इतना कह कर फिर से उषा कि चूत में अपना लंड जोर जोर से पेलने लगे और थोड़ी देर के बाद अपना लंड जड़ तक टूस कर अपनी बहू कि चूत के अन्दर झड़ गये ।

उषा भी अपने ससुर कि लंड को चूत को उठा कर अपनी चूत में खाती खाती झड़ गई । थोड़ी देर तक दोनों ससुर और बहू अपनी चुदाई से थक कर सुस्त पड़े रहे ।

थोड़ी देर के बाद उषा ने अपनी आंखे खोली और अपने ससुर और खुद को नंगी देख कर शर्मा कर अपने हाथों से अपना चेहरा ढक लिया । तब गोविन्द जी उठ कर पहले बाथरूम में जा कर अपना लंड धो कर साफ़ करने के बाद फिर से उषा के पास बैठ गये और उसके शरीर से खेलने लगे । गोविन्द जी ने अपने हाथों से उषा का हाथ उसके चेहरे से हटा कर अपने बहू से पूछा- क्यों, छिनाल चुदकड़ रण्डी उषा मजा आया अपने ससुर के लंड से अपनी चूत चुदवा कर ? बोल कैसा लगा मेरा लंड और उसके धक्के ?

उषा अपने हाथों से अपने ससुर को बांध कर उनको चूमते हुए बोली- बाबूजी अपका लंड बहुत शानदार है और इसको किसी भी औरत कि चूत को चोद कर मजा देने कि कला आती है । लेकिन, सबसे अच्छा मुझे आपका चोदते हुए गन्दी बात करना लगा । सच जब आप



गन्दी बात कराते है और चोदते है तो बहुत अच्छा लगता है।

गोविन्द जी ने अपने हाथों से उषा कि चुची को पकड़ कर मसलते हुए बोले- अरे छिनाल, जब हम गन्दा कम कर रहे है तो गन्दी बात करने में क्या फ़रक पड़ता है और मुझे तो चुदाई के समय गाली बकने कि आदत है। अच्छा अब बोल तुझे मेरा चुदाई कैसी लगी ? मजा आया कि नहीं, चूत कि खुजली मिटी कि नहीं ? उषा ने तब अपने हाथों से अपने ससुर का लंड पकड़ कर सहलाते हुए बोली- ससुरजी आपका लंड बहुत ही शानदार है और मुझे अपसे अपनी चूत चुदवा कर बहुत मजा आया। लगता है कि आपके लंड को भी मेरी चूत बहुत पसंद आई। देखिये ना, आपका लंड फिर से खड़ा हो रहा है। क्या बात है एक बार और मेरी चूत में घुसना चाहता है क्या ?

गोविंदजी ने तब अपने हाथ उषा कि चूत पर फेराते हुए बोले- साली कुतिया, एक बार अपने ससुर का लंड खा कर तेरी चूत का मन नहीं भरा, फिर से मेरा लंड खाना चाहती है ? ठीक है मैं तुझको अभी एक बार फिर से चोदता हूं।’

गोविन्द जी कि बात सुन कर उषा झट से उठ कर बैठ गई और अपने ससुर के समने झुक कर अपने हाथ और पैर के बल बैठ कर अपने ससुर से बोली- बाबू जी, अब मेरी चूत में पीछे से अपना लंड डाल कर चोदिये। मुझे पीछे से चूत में लंड डलवाने में बहुत मजा आता है।’ गोविन्द जी ने तब अपने सामने झुकी हुई उषा की चूतड़ पर हाथ फेराते हुए उषा से बोले- साली कुत्ती तुझको पीछे से लंड डलवाने में बहुत मजा आता है ? ऐसा तो कुतिया चुदवाती है, क्या तू कुतिया है ? उषा अपना सिर पीछे घुमा कर बोली- हाँ मेरे चोदू ससुरजी मैं कुतिया हूं और इस समय आप मुझे कुत्ता बन कर मेरी चूत चोदेंगे। अब जल्दी भी करिये और शुरु हो जाओ जल्दी से मेरी चूत में अपना लंड डालिये।’ गोविन्द जी अपने लंड पर थूक लगाते हुए बोले- ले मेरी रण्डी बहू ले, मैं अभी तेरी फुदकती चूत में अपना लंड डाल कर उसकी खबार लेता हूं। साली तू बहुत चुदकड़ है। पता नहीं मेरा बेटा तुझको शान्त कर पायेगा कि नहीं।’ और इतना कहकर गोविन्द जी अपने बहू के पीछे जाकर



उसकी चूत अपने अंगुलियों से फैला कर उसमे अपना लंड डाल कर चोदने लगे। चोदते चोदते कभी कभी गोविन्द जी अपना अंगुली उषा कि गांड में घुसा रहे थे और उषा अपनी कमार हिला हिला अपनी चूत में ससुर के लंड को अन्दर भर कर करवा रही थी। थोड़ी देर के चोदने के बाद दोनों बहू और ससुर जी झड़ गये। तब उषा उठ कर बाथरूम में जाकर अपना चूत और जांघे धोकर अपने बिस्तर पर आकर लेट गई और गोविन्द जी भी अपने कमरे जाकर सो गये।

अगले हफ्ते रमेश और उषा अपने हनीमून मनाने अपने एक दोस्त, जो कि शिमला में रहता है, चले गये। जैसे ही रमेश और उषा शिमला एयरपोर्ट से बाहर निकले तो देखा कि रमेश का दोस्त, गौतम और उसकी बीवी सुमन दोनों बाहर अपनी कार के साथ उनका इन्तज़ार कर रहे है। रमेश और गौतम आगे बढ़ कर एक दूसरे के गले लग गये। फिर दोनों ने अपनी अपनी बीवियों से परिचय करवा दिया और फिर कार में बैठ कर घर की तरफ़ चल पड़े। घर पहुंच कर रमेश और गौतम बैठक में बैठ कर पुरानी बातों में मशगूल हो गय और उषा और सुमन दूसरे कमरे में बैठ कर बातें करने लगे। थोड़ी देर के बाद रमेश और गौतम अपनी बीवियों को बुलाकर उनसे कहा कि खाना लगा दो बहुत जोर की भूख लगी है। सुमन ने फटाफ़ट खाना लगा दिया और चारों डाईनिंग टेबल पर बैठ कर खाने लगे। खाना खाते समय उषा देख रही थी कि रमेश सुमन को घूर घूर कर देख रहा है और सुमन भी धीरे धीरे मुसकुरा रही है। उषा को दाल में कुछ काला नज़र आया। लेकिन वो कुछ नहीं बोली।

अगले दिन सुबह गौतम नहा धो कर और नाश्ता करने के बाद अपने ऑफ़िस के लिये रवाना हो गया। घर पर उषा, रमेश और सुमन पर बैठ कर नाश्ता करने के बाद गप लड़ा रहे थे। उषा ने आज सुबह भी ध्यान दिया कि रमेश अभी भी सुमन को घूर रहा है और सुमन धीरे धीरे मुसकुरा रही है। थोड़ी देर के बाद उषा नहाने के लिये अपने कपड़े ले कर बाथरूम में गई। करीब आधे घण्टे के बाद जब उषा बाथरूम से नहा धो कर सिर्फ़ एक तौलिया लपेट कर बथरूम से निकली तो उसने देखा कि सुमन सिर्फ़ ब्लाऊज और पेटीकोट पहने



टांगे फैला कर अपनी कुरसी पर फैली आधी लेटी और आधी बैठी हुई है और उसके ब्लाऊज के बटन सब के सब खुले हुए हैं रमेश झुक कर सुमन की एक चुची अपने हाथों से पकड़ चूस रहा है और दूसरे हाथ से सुमन की दूसरी चुची को दबा रहा है। उषा यह देख कर सन्न रह गई और अपनी जगह पर खड़ी कि खड़ी रह गई। तभी सुमन कि नज़र उषा पर पर गई तो उसने अपनी हाथ हिला कर उषा को अपने पास बुला लिया और अपनी एक चुची रमेश से छुड़ा कर उषा की तरफ़ बढा कर बोली- लो उषा तुम भी मेरी चुची चूसो।' रमेश चुपचाप सुमन कि चुची चूसता रहा और उसने उषा कि तरफ़ देखा तक नहीं। सुमन ने फिर से उषा से बोली- लो उषा तुम भी मेरी चुची चूसो, मुझे चुची चुसवाने में बहुत मजा मिलता है तभी मैं रमेश से अपनी चुची चुसवा रही हूं।' उषा अब कुछ नहीं बोली और सुमन की दूसरी चुची अपने मुंह में भर कर चूसने लगी।

थोड़ी देर के बाद उषा ने देखा कि सुमन अपना हाथ आगे कर के रमेश का लंड उसके पैजामे के ऊपर से पकड़ कर अपनी मुट्ठी में लेकर मारोड़ रही है और रमेश सुमन कि एक चुची अपने मुंह में भर कर चूस रहा है। अब तक उषा भी गर्म हो गई थी। तभी सुमन ने रमेश का पैजामे का नाड़ा खींच कर खोल दिया और रमेश का पैजामा सरक कर नीचे गिर गया। पैजामा के नीचे गिरते ही रमेश नंगा हो गया क्योंकि वो पैजामे के नीचे कुछ नहीं पहन रखा था। जैसे ही रमेश रमेश नंगा हो गया वैसे ही सुमन आगे बढ कर रमेश का खड़े लंड को पकड़ लिया और उसका सुपारा को खोलने और बंद करने लगी और अपने होठों पर जीभ फेरने लगी। यह देख कर उषा ने अपने हाथों से पकड़ कर रमेश का लंड सुमन के मुंह से लगा दिया और सुमन से बोली- लो सुमन, मेरे पति का लंड चूसो। लंड चूसने से तुम्हें बहुत मजा मिलेगा। मैं भी अपनी चूत मारवाने के पहले रमेश का लंड चूसती हूं। फिर रमेश भी मेरी चूत को अपने जीभ से चाटता है।' जैसे ही उषा ने रमेश का लंड सुमन के मुंह से लगाया वैसे ही सुमन ने अपनी मुंह खोल कर के रमेश का लंड अपने मुख में भर लिया और उसको चूसने लगी। अब रमेश अपनी कमर हिला हिला कर अपना लंड सुमन के मुंह के अन्दर बाहर करने लगा और अपने हाथों से सुमन कि दोनों चुची पकड़ कर



मसलने लगा। तब उषा ने आगे बढ़ कर सुमन के पेटीकोट का नाड़ा खोल दिया। पेटीकोट का नाड़ा खुलते ही सुमन ने अपनी चूतड़ कुरसी पर से थोड़ा सा उठा दिया और उषा अपने हाथों से सुमन की पेटीकोट को खींच कर नीचे गिरा दिया। सुमन ने पेटीकोट के नीचे पेण्टी नहीं पहनी थी और इसालीये पेटीकोट खुलते ही सुमन भी रमेश कि तरह बिल्कुल नंगी हो गई।

उषा ने सबसे पहले नंगी सुमन की जांघो को खोल दिया और उसकी चूत को देखाने लगी। सुमन की चूत पर झांटे बहुत ही करीने से हटाई गई थी और इस समय सुमन कि चूत बिल्कुल चमक रही थी। सुमन कि चूत से चुदाई के पहले निकलने वाला रस रिस रिस कर निकल रहा था। उषा झुक कर सुमन के सामने बैठ गई और सुमन कि चूत से अपनी मुंह लगा दिया। उषा का मुंह जैसे ही सुमन कि चूत पर लगा तो सुमन ने अपनी टांगे और फैला दिया और अपने हाथों से अपनी चूत को खोल दिया। अब उषा ने आगे बढ़ कर सुमन कि चूत को चाटना शुरू कर दिया। उषा अपनी जीभ को सुमन कि चूत के नीचे से लेकर चूत के ऊपर तक ला रही थी और सुमन मारे गर्मी के उषा का सर अपने हाथों से पकड़ कर अपनी चूत पर दबा रही थी। उधर रमेश ने जैसे ही देखा कि उषा अपनी जीभ से सुमन कि चूत को चाट रही है तो उसने अपना लंड सुमन के मुंह से लगा कर एक हलका सा धक्का दिया और सुमन अपना मुंह खोल कर रमेश का लंड अपने मुंह में भर लिया। नीचे उषा अपनी जीभ से सुमन कि चूत को चाट रही थी और कभी कभी सुमन के दाने को अपने दांतो से पकड़ कर हलके हलके से दबा रही थी।

थोड़ी देर तक सुमन कि चूत को चाटने और चूसने का बाद उषा उठ कर खड़ी हो गई और रमेश का लंड पकड़ सुमन के मुंह से निकल दिया और सुमन से बोली- सुमन अब बहुत हो गया लंड चूसना और चूत चटवाना चलो अब अपने पैर कुरसी के हत्थो के ऊपर रखो और रमेश का लंड अपने चूत में पिलवाओ। मुझे मालूम है कि अब तुम्हे रमेश का लंड अपने मुंह में नहीं अपनी चूत के अन्दर चाहिये।' और उषा ने अपने हाथों से अपने पति का खड़ा



हुआ लंड सुमन कि गीली चूत कि ऊपर रख दिया। चूत पर लंड के रखते ही सुमन ने अपने हाथों से उसको अपनी चूत की छेद से भिड़ा दिया और रमेश कि तरफ़ देख कर मुसकुरा कर बोली- लो अब तुम्हारी बीवी ने ही तुम्हारा लंड को मेरी चूत से भिड़ा दिया। अब देर किस बात का है। चलो चुदाई शुरू कर दो।' इतना सुनते ही रमेश ने अपना कमर हिला कर अपना तना हुआ लंड सुमन कि चूत के अन्दर उतार दिया। चूत के अन्दर लंड घुसते ही सुमन ने अपने पैर को कुरसी के हथ्यों पर रख कर और फैला दिया और अपने हाथों से रमेश का कमर पकड़ कर उसको अपनी तरफ़ खींच लिया। अब रमेश अपने दोनों हाथों से सुमन कि दोनों चुची को पकड़ कर अपना कमर हिला हिला कर सुमन को चोदना शुरू कर दिया। सुमन अपनी चूत में रमेश का लंड पिलवा कर बहुत खुश थी और वो मुड़ कर उषा से बोली,

‘उषा तेरे पति का लंड बहुत ही शानदार है, बहुत लम्बा और मोटा है। रमेश का लंड मेरे बच्चेदानी पर ठोकर मार रहा है। तेरी ज़िन्दगी तो रमेश से चुदवा कर बहुत आराम से कट रही होगी ?’

उषा तब रमेश का एक हाथ सुमन कि चुची पर से हटा कर सुमन कि चुची को मसलते हुए बोली- हाँ, मेरे पति का लंड बहुत ही शानदार है और मुझे रमेश से चुदवाने में बहुत मजा मिलता है। मैं तो हर रोज़ तीन – चार बार रमेश का लंड अपनी चूत में पिलवाती हूँ। क्यों, गौतम तेरी चूत नहीं चोदता ? कैसा है गौतम का लंड ?’

सुमन बोली- गौतम का लंड भी अच्छा है और मैं हर रोज़ दो – तीन बार गौतम के लंड से अपनी चूत चुदवाती हूँ। गौतम रोज़ रात को हमको रगड़ कर चोदता है और रात कि चुदाई के समय मैं कम से कम से चार-पांच बार चूत का पानी गिराती हूँ। लेकिन रमेश के लंड की बात ही कुछ और है। यह लंड तो मेरे बच्चेदानी पर ठोकर मार रहा है। असल में मुझे अपनी पति के अलावा दूसरे लंड से चुदवाने में बहुत मजा आता है और जब से मैंने रमेश



को देखा है, तभी से मैं रमेश का लंड खाने के लिये लालायित थी। अब मेरी मन की मुराद पूरी हो गई है। अब शाम को जैसे ही गौतम ऑफिस से घर आयेगा उसका लंड मैं तेरी चूत में पिलवाऊँगी। तब देखना कि गौतम कैसे तुमको चोदता है। मुझे मालूम है कि गौतम के लंड को अपनी चूत से खाकर तुम बहुत खुश होगी।' उषा चुपचाप सुमन कि बात सुनती रही और झुक कर रमेश का लंड सुमन की चूत के अन्दर बाहर होना देखती रही। थोड़ी देर के बाद उषा झुक कर सुमन कि एक चुची अपने मुंह में भर लिया और जोर जोर से चूसने लगी।

थोड़ी देर के बाद उषा को अहसास हुआ कि कोई उसके चूत के ऊपर से उसकी तौलिया हटा कर उसकी चूत में अपना लंड घुसेड़ने की कोशिश कर रहा है। उषा ने चौंक कर पीछे मुड़ कर देखा तो पाया कि उसकी चूत में लंड घुसेड़ने वाला और कोई नहीं बल्कि गौतम है। हुआ यह कि गौतम के ऑफिस में किसी का देहान्त हो गया था और इसालीये ऑफिस में छुट्टी हो गई थी। इसलिये गौतम ऑफिस जाकर वापस आ गया था।

गौतम अब तक उषा कि बदन से उसकी तौलिया हटा कर अपना तन्नाया हुआ लंड उषा कि चूत में डाल चुका था और उषा की कमर को पकड़ के उषा की चूत में अपने लंड की ठोकर मारना शुरू हो गया था। गौतम जोर जोर से उषा कि चूत अपने लंड से चोद रहा था और अपने हाथों से उषा कि चुची को मसल रहा था। रमेश इस समय सुमन को जोरदार धक्को के साथ चोद रहा था और उसने अपना सिर घुमा कर जब उषा कि चुदाई गौतम के साथ होते देखा तो मुसकुरा दिया और गौतम से बोला- देख गौतम देख, मैं तेरे ही घर में और तेरे ही समने तेरी बीवी को चोद रहा हूं। तुझे तेरी बीवी कि चुदाई देख कर कैसा लग रहा है ? गौतम ने तब उषा को चूमते और उसकी चुची को मलते हुए रमेश से बोला- अबे रमेश, तू क्या मेरी बीवी को चोद रहा है। अरे मेरी बीवी तो पुरानी हो गई है उसकी चूत मैं पिछले दो साल से रात दिन चोद रहा हूं। सुमन कि चूत तो अब काफ़ी फैल चुकी है। अबे तू देख मैं तेरे समने तेरी नई ब्याही बीवी को कुतिया कि तरह झुका कर उसकी टाईट चूत में अपना



लंड डाल कर चोद रहा हूं। अब बोल किसे ज्यादा मजा मिल रहा है। सही में यार रमेश, तेरी बीवी कि चूत बहुत ही टाईट है मगर तेरी बीवी बहुत चुद्कड़ है, देख देख कैसे तेरी बीवी कि चूत ने मेरा लंड पकड़ रखा है।' फिर गौतम उषा कि चुची को मसालते हुए उषा से बोला- ओह! ओह! मुझे उषा कि चूत चोदने में बहुत मजा मिल रहा है। अह! उषा रानी और जोर से अपनी गांड हिला कर मेरे लंड पर धक्का मार। मैं पीछे से तेरी चूत पर धक्का मार रहा हूं। उषा रानी बोल, बोल कैसा लग रहा मेरे लंड से अपनी चूत चुदवना। बोल मजा मिल रहा कि नहीं? तब उषा अपनी गांड को जोर जोर से हिला कर गौतम का लंड अपनी चूत को खिलाते हुए गौतम से बोली- चोदो मेरे राजा और जोर से चोदो। मुझे तुम्हारी चुदाई से बहुत मजा मिल रहा है। तुम्हारा लंड मेरे चूत की आखरी छोर तक घुस रहा है। ऐसा लग रहा कि तुम्हारा लंड का धक्का मेरी चूत से होकर मेरी मुंह से निकल पड़ेगा। और जोर से चोदो, और सुमन और रमेश को दिखा दो कि चूत की चुदाई कैसे कि जाती है।'

गौतम और उषा कि चुदाई देखते हुए सुमन उषा से बोली- क्यों छिनाल उषा, गौतम का लंड पसन्द आया कि नहीं? मैं ना बोल रही थी कि गौतम का लंड बहुत ही शानदार है और गौतम बहुत अच्छी तरह से चोदता है? अब जी भर मस्त चुदवा ले अपनी चूत गौतम के लंड से। मैं भी अपनी चूत रमेश से चुदवा रही हूं।' रमेश जोरदार धक्को के साथ सुमन को चोदते हुए बोला- यार गौतम, यह दोनों औरत बड़ी चुदासी है, चल आज दिन भर इनकी चूत चोद चोद कर इनकी चूतों को भोसड़ा बना देते हैं। तभी इनकी चूतों कि खुजली मिटेगी।' इतना कह कर रमेश सुमन कि चूत पर पिल पड़ा और दना दन चोदने लगा। गौतम भी पीछे नहीं था, वो अपना हाथों से उषा कि दोनों चुची पकड़ कर अपनी कमर के झटकों से उषा कि चूत चोदना चालू रखा। थोड़ी देर तक ऐसे ही चुदाई चलती रही और दोनों जोड़े अपने अपने साथियों की जम कर चुदाई चालू रखी और थोड़ी देर के बाद दोनों जोड़े साथ ही झड़ गये। जैसे ही रमेश और गौतम सुमन और उषा कि चूत के अन्दर झड़ने के बाद अपना अपना लंड बाहर निकाला तो दोनों का लंड सफ़ेद सफ़ेद पानी से सना हुआ



था और उधर सुमन और उषा कि चूतों से भी सफ़ेद सफ़ेद गाढा पानी निकल रहा था। झट से सुमन और उषा उठ कर अपने अपने पतियों का लंड अपने मुंह में भर कर चूस चूस कर सफ़ किया और फिर एक दूसरे की चूत में मुंह लगा कर अपने अपने पतियों का वीर्य चाट चाट कर सफ़ किया। थोड़ी देर के बाद रमेश और गौतम का सांस नोरमल हुआ और उठ कर एक दूसरे के गले लग गये और बोले। 'यार एक दूसरे की बीवीयों को चोदने का मजा ही कुछ अलग है। अब जब तक हमलोग एक साथ है बीवीयों को अदल बदल करके ही चोदेंगे।'

थोड़ी देर के बाद सुमन और उषा अपनी कुरसी से उठ कर खड़ी हो गई और तौलिया से अपनी चूत और जांघे पोंछ कर नंगी ही किचन कि तरफ़ चल पड़ी। उनको नंगी जाते देख कर रमेश और गौतम का लंड खड़े होना शुरू कर दिया। थोड़ी देर के बाद सुमन और उषा नंगी ही किचन से चाय और नाश्ता ले कर कमरे में आई और कुर्सी पर बैठ गई। रमेश और गौतम भी नंगे ही कुरसी पर बैठ गये। थोड़ी देर के बाद सुमन झुक कर प्याली में चाय पलटने लगी। सुमन के झुकने से उसकी चुची दोनों हवा ने झूलने लगे। यह देख कर रमेश ने आगे बढ़ कर सुमन कि चुची को पकड़ लिया और उन्हे दबाने लगा। यह देख कर उषा अपनी कुरसी से उठ कर खड़ी हो गई और गौतम के नंगे गोद पर जा कर बैठ गई। जैसे ही उषा गोद में बैठी गौतम ने अपने हाथों से उषा को जकड़ लिया और उसकी चुची को दबाने लगा। उषा झुक कर गौतम के लंड को पकड़ कर सहलाने लगे और थोड़ी देर के गौतम के लंड को अपने मुंह में भर लिया। यह देख कर सुमन चाय बनना छोड़ कर रमेश के पैरो के पस बैठ गई उसने भी रमेश का लंड अपने मुंह में भर लिया। थोड़ी देर के बाद रमेश ने अपने हाथों से सुमन को खड़े किया और उसको टेबल के सहारे झुका कर सुमन कि चूत में पीछे से जाकर अपना लंड घुसेड़ दिया। सुमन एक हल्की से सिसकरी भर कर अपने चूतड़ हिला हिला अपनी चूत में रमेश का लंड पिलवती रही और वो खुद उषा और गौतम को देखने लगी। रमेश और सुमन को फिर से चुदाई शुरू करते देख गौतम भी अपने आप को रोक नहीं पाया और उसने उषा को अपनी गोद से उठा कर फिर से उसके दोनों पैर अपने



दोनों तरफ़ करके बैठा लिया। इस तरीके से उषा की चूत ठीक गौतम के लंड के सामने थी। उषा ने अपने हाथों से गौतम के लंड को पकड़ कर अपनी चूत से भिड़ा कर गौतम के गोद पर झटके साथ बैठ गई और गौतम का लंड उषा कि चूत के अन्दर चला गया। उषा अब गौतम के गोद पर बैठ कर अपनी चूत उठा उठा कर गौतम के लंड का धक्का अपनी चूत पर लेने लगी। कमरे सिर्फ़ फस्सह, फस्सह का आवाज गूँज रही थी और उसके साथ साथ सुमन और उषा की सिसकियाँ।

रमेश थोड़ी देर तक सुमन कि चूत पीछे से लंड डाल कर चोदता रहा। थोड़ी देर के बाद उसने अपनी एक अंगुली में थूक लग कर सुमन कि गांड में अंगुली करने लगा। अपनी गांड में रमेश कि अंगुली घुसते ही सुमन ओह! ओह! है! कर उठी। उसने रमेश से बोली- क्या बात है, अब मेरी गांड पर भी तुम्हारी नज़र पड़ गई है। अरे पहले मेरी चूत कि आग को शान्त करो फिर मेरी गांड कि तरफ़ देखना।' लेकिन रमेश अपनी अंगुली सुमन की गांड के छेद पर रख कर धीरे धीरे घुमाने लगा। थोड़ी देर के बाद रमेश ने अपनी अंगुली सुमन कि गांड में घुसेड़ दिया और धीरे धीरे अन्दर बाहर करने लगा। सुमन भी अपना हाथ नीचे ले जाकर अपनी चूत कि घुण्डी को सहलाने लगी। जब अपनी थूक और अंगुली से रमेश ने सुमन कि गांड कि छेद काफ़ी गीली कर ली तब रमेश ने अपने लंड पर थूक लगाकर सुमन कि गांड की छेद पर रखा। अपनी गांड में रमेश का लंड छूते ही सुमन बोल पड़ी- अरे अरे क्या कर रहे हो। मुझे अपनी गांड नहीं चुदवाना है। मुझे मालूम है कि गांड मरवाने से बहुत तकलीफ़ होती है। हटो, रमेश हटो अपना लंड मेरी गांड से हटा लो।' लेकिन तब तक रमेश ने अपना खड़े हुअ लंड सुमन कि गांड के छेद पर रख कर दबाने लगा था और थोड़ी से देर के बाद रमेश का लंड का सुपारा सुमन कि गांड कि छेद में घुस गया। सुमन चिल्ला पड़ी- अर्ररीईए माअर्रर डालाआआ, ओह! ओह! रमेस्सास्सहहह निकल्लल्लल्ल लूऊ अपनाआ म्मूस्सास्साअर्रर ज्जजाआईस्सास्साअ लंड्दद्द म्ममीर्रीई गाआनद्द सीई। मैईई मार्रर जौनगीईए।'।



लेकिन रमेश कहना सुनने वाला था। वो अपना कमर घुमा कर के और अपना लंड को हाथ से पकड़ के एक धक्का मारा तो उसका आधा लंड सुमन कि गांड में घुस गया। सुमन छटपटाने लगी।

थोड़ी देर के बाद रमेश थोड़ा रुक कर एक धक्का और मारा तो उसका पूरा का पूरा लंड सुमन कि गांड में घुस गया और वो झुक कर एक हाथ से सुमन की चुची सहलने लगा और दूसरे हाथ से सुमन की चूत में अंगुली करने लगा। लेकिन सुमन मारे दर्द के छटपटा रही थी और बोल रही थे- अबे साले भडुवे गौतम, देखो तुम्हारे सामने तुम्हारि बीवी कि गांड कैसे तुम्हारा दोस्त जबरदस्ती से मार रहा है। तुम कुछ करते क्यों नहीं। अब मेरी गांड आज फट जायेगी। लग रहा है आज इस चोदु रमेश मेरी गांड मार मार कर मेरी गांड और बुर एक कर देगा। गौतम प्लीज तुम रमेश से मुझे बचाओ।' तब रमेश अपने अंगुलियों से सुमन की चूत में अंगुली करते हुए सुमन से बोला- अरे सुमन रानी, बस थोड़ी देर तक सबर करो, फिर देखना आज गांड मरवाने ने तुम्हे कितना मजा मिलता है। आज मैं तुम्हारी गांड मार कर तुम्हारी चूत का पानी निकालूंगा। बस तुम ऐसे ही झुक कर खड़ी रहो।' रमेश की बात सुन कर गौतम अपना लंड से उषा कि चूत चोदता हुआ सुमन से बोला- रानी, आज तुम रमेश का मोटा लंड अपनी गांड डलवा कर खूब मजे उड़ाओ, मैं भी अभी अपना लंड रमेश की नई बीवी कि गांड में घुसेड़ता हूं और फिर उषा की गांड मारता हूं। मैं उषा की गांड मार कर तुम्हारी गांड मारने का बदला निकलता हूं।' उषा जैसे ही गौतम की बात सुनी तो बोल पड़ी- अरे वाह क्या हिसाब है, रमेश आज मौका पा कर सुमन कि गांड मार रहा है और उसकी कीमत मुझे अपनी गांड मारवा कर चुकनी पड़ेगी। नहीं मैं तो अपनी गांड में लंड नहीं पिलवती। गौतम तुम मेरी गांड के बजाय रमेश कि गांड मार कर अपना बदला निकालो।' गौतम तब उषा से बोला- नहीं मेरी चुटकड़ रानी, जिस तरह से रमेश ने मेरी बीवी कि गांड में अपना लंड घुसेड़ कर मेरी बीवी की गांड मार रहा है, मैं भी उसी तरह से रमेश कि बीवी की गांड में अपना लंड घुसेड़ कर रमेश कि बीवी कि गांड मारुंगा और तभी मेरा बदला पूरा होगा।' इतना कह कर गौतम ने अपना लंड उषा कि चूत से निकाल लिया



और उसमे फिर से थोड़ा थूक लगा कर उषा कि गांड से भिड़ा दिया। उषा अपनी कमर इधर उधर घुमाने लगी लेकिन गौतम ने अपने हाथों से उषा की कमर पकड़ कर अपना लंड का आधा सुपारा उषा कि गांड कि छेद में डाल दिया। उषा दर्द के मारे छटपटाने लगी।

उषा अपनी गांड से गौतम का लंड को निकालने कि कोशिश कर रही थी और गौतम अपने लंड को उषा कि गांड में घुसेड़ने कि कोशिश कर रहा था। इसी दौरान गौतम ने एक बार उषा कि कमर को कस कर पकड़ लिया और अपनी कमर हिला करके एक धक्का मारा तो उसके लौड़े का सुपारा उषा कि गांड कि छेद में घुस गया। फिर गौतम ने जलदी से एक और जोरदार धक्का मारा तो उसका पूरा का पूरा लंड उषा की गांड में घुस गया और गौतम की झांटे उषा कि चूतड़ को छूने लगी। अपनी गांड ने गौतम का लंड के घुसते ही उषा जोर से चीखी और चिल्ला कर बोली- साले बहनचोद, दूसरे कि बीवी कि गांड मुफ्त में मिल गया तो क्या उसको चोदना जरूरी है? भोसड़ी के निकाल अपना मूसल जैसा लंड मेरी गांड से और जा अपना लंड अपनी मा कि गांड में या उसकी बुर में घुसा दे। अरे रमेश तुमहे दिख नहीं रहा है, तुम्हारा दोस्त मेरी गांड फाड़ रहा है? अरे कुछ करो भी, रोको गौतम को, नहीं तो गौतम मेरी गांड मार मार कर मुझे गांडु बना देगा फिर तुम भी मेरी चूत छोड़ कर के मेरी गांड ही मारना।' रमेश अपना लंड सुमन की गांड के अन्दर बाहर कराते उषा से बोला- अरे रानी, क्यों चिल्ला रही हो। गौतम तुम्हे अभी छोड़ देगा और एक-दो गांड मारवने से कोइ गांडु नहीं बन जाता है। देखो ना मैं भी कैसे गौतम कि बीवी कि गांड ने अपना लंड अन्दर बहर कर रहा हूं। तुमको अभी थोड़ी देर के बाद गांड मारवने में भी बहुत मजा मिलेगा। बस चुपचाप अपनी गांड में गौतम का लंड पिलवाती जाओ और मजा लूटो। इतना सुनते ही गौतम ने अपना हाथ आगे बढ़ा कर उषा कि एक चुची पकड़ कर मसलने लगा और अपना कमर हिला हिला कर अपना लंड उषा कि गांड के अन्दर बाहर करने लगा। थोड़ी देर के उषा को भी मजा आने लगा और वो अपनी कमर चला चला कर गौतम का लंड अपनी गांड से खाने लगी। थोड़ी देर के बाद रमेश और गौतम दोनों ही सुमन और उषा कि गांड में अपना लंड के पिचकारी से भर दिया और सुस्त हो कर सोफ़ा में लेट गये।



इस तरह से रमेश और उषा जब तक गौतम और सुमन के घर पर रुके रहे तब तक दोनों दोस्त एक दूसरे कि बीवीयों की चूत चोद चोद कर मजा मारते रहे। कभी कभी तो दोनों दोस्त उषा या सुमन को एक साथ चोदते थे। एक बिस्तर पर लेट कर नीचे से अपना लंड चूत में डालता था और दूसरा अपना लंड ऊपर से गांड में डालता था। उषा और सुमन भी हर समय अपनी चूत या गांड मरवाने के लिये तैयार रहती थी। जब सब लोग घर के अन्दर रहते थे तो सभी नंगे ही रहते थे। उषा और सुमन भी नंगी हो कर ही चाय या खाना बनाती थी और जब भी रमेश या गौतम उनके पास अता था तो वो झुक कर उनका लंड अपने मुंह में भर कर चूसती थी और जैसे ही लंड खड़े हो जाता था तो खुद अपने हाथों से खड़े लंड को अपनी चूत से भिड़ा कर खुद धक्का मार कर अपनी चूत में भर लेती थी। एक हफ्ता तक उषा और रमेश अपने दोस्त के घर बने रहे और फिर वापस अपने घर के लिये चल पड़े।

जब प्लेन में रमेश और उषा अपने घर के लिये जा रहे थे तो रमेश ने उषा से पूछा, क्यों उषा रानी, एक बात सही सही बातओ, कौन ज्यादा अच्छा चोदता है, मैं, गौतम या पिताजी ?' रमेश का बात सुन कर उषा बिल्कुल अचम्भित हो गई, फिर उसने धीरे से पूछा- पिताजी से चुदाई कि बात तुमको कैसे मालूम ? तुम तो अपनी सुहागरात पर डचूटी पर थे ?' तब रमेश धीरे से उषा को चूमते हुए बोला- हाँ, तुम ठीक कह रही हो, मुझे उस दिन डचूटी पर जाना पड़ा। जब हम अपनी डचूटी से करीब एक घण्टे के बाद लौटा तो देखा तुम पिताजी का लंड पकड़ चूस रही हो और पिताजी तुम्हारी चूत में अपनी अंगुली पेल रहे है। यह देख मैं चुपचाप कमरे के बहर खड़े हो कर तुम्हे और पिताजी का चुदाई खत्म होते वक्त तक देखा और फिर लौट गया और सुबह ही घर पर आया।'

'क्या तुम मुझसे नाराज़ हो' उषा धीरे से रमेश से पूछा।

'नहीं, मैं तुम से बिल्कुल भी नाराज़ नहीं हूँ। तुमने पिताजी को अपनी चूत दे कर एक बहुत बड़ा उपकार किया है' रमेश बोला। उषा यह सुन कर बोली- वो कैसे'। तब रमेश बोला- अरे



हमारी माताजी अब बुड्डी हो गई है और उनको टांगे उठाने में तकलीफ़ होते हैं, लेकिन पिताजी अभी भी जवान हैं। उनको अगर घर पर चूत नहीं मिलती तो वो जरूर से बाहर जाकर अपना मुंह मारते। उसमें हम लोगो कि बदनामी होती। हो सकता कि पिताजी को कोई बिमारी ही हो जाती। लेकिन अब यह सब नहीं होगा क्योंकि उनको घर पर ही तुम्हारी चूत चोदने को मिल जाया करेगा।’

‘तो क्या मुझको पिताजी से घर में बार बार चुदवाना पड़ेगा?’ उषा ने पलट कर रमेश से पूछा।

‘नहीं बार बार नहीं, लेकिन जब उनकी मरज़ी हो तुम उनको अपनी चूत देने से मना मत करना।’

‘लेकिन अगर तुम्हारी माताजी ने देख लिया तो?’ उषा ने पूछा।

‘तब की बात तब देखी जायेगी’ रमेश ने कहा।

फिर उषा और रमेश अपने घर आ गये और वे अपने अपने कम पर लग गये। रमेश अब पूरी तरह से ड्यूटी करता और रात को उषा को नंगी करके खूब चोदता था। गोविन्द जी भी कभी कभी उषा को मौका देख चोद लेते थे। फिर कुछ दिनों के बाद उषा और रमेश साथ साथ उषा के मैके गये। ससुराल में रमेश का बहुत आव-भगत हुआ। उषा के जितने रिश्तेदार थे उन सभी ने रमेश और उषा को खाने पर बुलया। रमेश और उषा को मज़े ही मज़े थे। अपने ससुराल पर भी रमेश उषा को रात को दो-तीन दफ़ा जरूर चोदता था और कभी मौका मिल गया तो दिन को उषा को बिसतर पर लेटा कर चुदाई चालू कर देता था। एक दिन रमेश पास की किसी दुकान पर गया हुआ था। उषा कमरे में बैठ कर पेपर पढ़ रही थी। एकाएक उषा को अपनी मा, रजनी जी के रोने कि अवाज़ सुनाई दिया। उषा भाग कर अन्दर गई तो देखा कि रजनी जी भगवानजी के फोटो सामने खड़ी खड़ी रो रही है और



भगवानजी से बोल रही है,

‘भगवन तुमने ये क्या किया। तुम मेरे पति इतनी जल्दी क्यों उठा लिया और अगर उनको उठा लिया तो मेरी बदन में इतना गर्मी क्यों भर दिया। अब मैं जब जब अपनी लड़की और दामाद कि चुदाई देखती हूँ तो मेरी शरीर में आग लग जाती है। अब क्या करूँ? कोई रास्ता तुम्ही दिखला दो, मैं अपनी गर्म शरीर से बहुत परेशान हो गई हूँ।’ उषा समझ गई कि क्या बात है। वो झट अपनी मा के पास जकर मा को अपने बाहों में भर लिया और पीछे से चूमते हुए बोली,

‘मा तुमको इतना दुख है तो मुझसे क्यों नहीं बोली?’ रजनी जी अपने आपको उषा से चुराते हुए बोली,

‘मैं अगर तुझे बता भी दूँ तो तू क्या कर लेती? तुम भी तो मेरी ही तरह से एक औरत हो?’

‘अरे मुझसे कुछ नहीं होता तो क्या तुम्हारा दामाद तो है? तुम्हारा दामाद ही तुमको शान्त कर देगा’ उषा अपनी मा को फिर से पकड़ कर चूमते हुए बोली।

‘क्या बोली तू, अपने दामाद से मैं अपनी जिस्म कि भूख शान्त करवाऊँगी? तेरा दिमाग तो ठीक है?’ रजनी जी अपनी बेटी उषा से बोली। तब उषा अपने हाथों से अपनी मा कि चुची को पकड़ कर दबाते हुए बोली- इसमे क्या हुआ? तुम जिस्म कि भूख से मरी जा रही हो, और तुम्हारा दामाद तुम्हारी जिस्म कि भूख को नहीं मिटा सकता है क्या?, अगर तुम्हारी जगह मैं होती तो मैं अपने दामाद के समने खुद लेट जाती और उससे कहती आओ मेरे प्यारे दामादजी मेरे पास आओ और मेरी जिस्म की आग बुझाओ।’

‘चल हट बड़ी चुदकड़ बन रही है, मुझे तो यह सोच कर ही शरम आ रही है, कि मैं अपनी दामाद के सामने नंगी लेट कर अपनी टांगे उठाऊँगी और वो मेरी चूत में अपना लंड



पेलेगा' रजनी जी मुड़ कर अपनी बेटी कि चुची को मसलते हुये बोली ।

तभी रमेश, जो कि बाहर गया हुआ था, कमरे में घुसा और घुसते हुए उसने अपनी बीवी और सास की बातों को सुन लिया । रमेश ने आगे बढ़ कर अपनी सास के सामने घुटने के बल बैठ गया और अपनी सास के चूतड़ों को अपने हाथों से घेर कर पकड़ते हुए सास से बोला- मा आप क्यों चिन्ता कर रही हैं, मैं हूँ ना ? मेरे रहते हुए आपको अपनी जिस्म कि भूख कि चिन्ता नहीं करनी चाहिये । अरे वो दामाद ही बेकार का है जिसके होते हुए उसकी सास अपनी जिस्म की भूख से पागल हो जाये ।'

'नहीं, नहीं, छोड़ो मुझे । मुझे बहुत शरम लग रही है' रजनी जी ने अपने आप को रमेश से छुड़ाते हुए बोली । तभी उषा ने आगे बढ़ कर अपनी मा कि चुची को पकड़ कर मसलते हुए उषा अपनी मा से बोली- क्यों बेकार की शरम कर रही हो मा । मन भी जाओ अपने दामाद की बात और चुपचाप जो हो रहा उसे होने दो ।' तब थोड़ी देर चुप रहने के बाद रजनी जी अपनी बेटी की तरफ देख कर बोली- ठीक है, जैसे तुम लोगो कि मरजी । लेकिन एक बात तुम दोनों कान खोल कर सुन लो । मैं अपने दामाद के समने बिल्कुल नंगी नहीं हो पाऊँगी । आगे जैसा तुम लोग चाहो ।' इतना सुन कर रमेश मुसकुरा कर अपने सास से कह- अरे सासुमा आप को कुछ नहीं करना है । जो कुछ करमा मैं ही करुंगा, बस आप हमारा साथ देती जाये ।'

फिर रमेश उठ कर खड़े हो गया और अपनी सास को अपनी दोनों बाहों में जकड़ कर चूमने लगा । रजनी जी चुपचाप अपने आप को अपने दामाद के बाहों में छोड़ कर खड़ी रही । थोड़ी देर तक अपने सास को चूमने के बाद रमेश ने अपने हाथों से अपने सास कि चुची पकड़ कर दबाने लगा । अपने चुची पर दामाद का हाथ पड़ते ही रजनी जी मारे सुख के बिलबिला उठी और बोलने लगी- और जोर से दबाओ मेरी चूचियो को बहुत दिन हो गये किसी ने इस पर हाथ नहीं लगाया है । मुझे अपने दामाद से चुची मसलवाने में बहुत मजा



मिल रहा है। और दबाओ। आ बेटा तू ही आ मेरे पास आजा और मेरे इन चुची से खेल।' अब रमेश फिर से अपने सास के पैरों के पास बैठ गया और उनकी साड़ी के ऊपर से ही उनकी चूत को चूमने लगा। रजनी जी अपने चूत के ऊपर अपने दामाद के मुंह लगते ही बिलबिला उठी और जोर जोर से सांस लेने लगी।

रमेश भी उनकी साड़ी के ऊपर से ही उनकी चूत को चूमता रहा। थोड़ी देर के बाद रजनी जी से सहा नहीं गया और खुद ही अपने दामाद से बोली- अरे अब कितना तड़पाओगे। तुम्हे चूत में अंगुली या जीभ घुसानी है तो ठीक तरीके से घुसाओ। साड़ी के ऊपर से क्या कर रहे हो?' अपनी सास की बात सुन कर रमेश बोला- मैं क्या करता, आपने ही कहा था आप साड़ी नहीं उतारेंगे। इसलिये मैं आपकी साड़ी के ऊपर से ही आपकी चूत चूम रहा हूँ।'

'वो तो ठीक है, लेकिन तुम मेरी साड़ी उठा कर भी तो मेरी चूत का चुम्मा ले सकते हो?' रजनी जी ने अपने दामाद से बोली। अपनी सास की बात सुनते ही रमेश ने जल्दी से अपनी सास की साड़ी को पैरों के पास से पकड़ कर ऊपर उठाना शुरू कर दिया और जैसे ही साड़ी रजनी जी की जांघो तक उठ गई तो रजनी जी मारे शरम के अपना चेहेरा अपने हाथों से ढक लिया और अपने दामाद से बोली- अब बस भी करो, और कितना साड़ी उठाओगे। अब मुझे शरम आ रही है। अब तुम अपना सर अन्दर डाल कर मेरी चूत को चूम लो।' लेकिन रमेश अपनी सास की बात को अनसुनी करते हुए रजनी जी की साड़ी को उनकी कमर तक उठा दिया और उनकी नंगी चूत पर अपना मुंह लगा कर चूत को चूम लिया। थोड़ी देर तक रजनी जी की नंगी चूत को चूम कर रमेश अपनी सास की चूत को गौर से देखने लगा और अपनी अंगुलियों से उनकी चूत की पत्तियों और दाने से खेलने लगा। रमेश की हरकतों से रजनी जी गर्मा गई और उनकी सांस जोर जोर से चलने लगी।

अपनी मा की हालत देख कर उषा आगे बढ़ कर अपनी मा की चूचियो से खेलने लगी और



धीरे धीरे उनकी ब्लाऊज के बटन खोलने लगी। रजनी ने अपने हाथों से अपने ब्लाऊज को पकड़ते हुए अपने बेटी से पूछने लगी- क्या कर रही हो ? मुझे बहुत शरम लग रही है। छोड़ दे बेटी मुझको।' उषा अपनी काम जारी रखते हुए अपनी मा से बोली- अरे मा, जब तुम अपने दामाद का मूसल अपने चूत में पिलवाने जा रही हो तो फिर अब शरम कैसी ? खोल दे अपने इन कपड़ों को और पूरी तरफ़ से नंगी हो कर मेरे पति के लंड का सुख अपने चूत से लो। छोड़ो अब, मुझको तुम्हारे कपड़े खोलने दो।' इतना कह कर उषा ने अपनी मां का ब्लाऊज, ब्रा, साड़ी और फिर उनकी पेटीकोट भी उतार दिया। अब रजनी जी अपने दामाद के समने बिल्कुल नंगी खड़ी थी। रमेश अपने नंगी सास को देखते ही उन पर टूट पड़ा और एक हाथ से उनकी चूचियों को मलता रहा और दूसरे हाथ से उनकी चूत को मसलता रहा। रजनी जी भी गर्म हो कर अपने दामाद का कुरता और पैजामा उतर दिया। फिर झुक कर अपने दामाद का अन्डरवियर भी उतार दिया। अब सास और दामाद दोनों एक दूसरे के सामने नंगे खड़े थे।

जैसे ही रजनी जी ने रमेश का मोटा मस्त लंड को देखा, रजनी जी अपने आप को रोक नहीं पाई और झुक कर उस मस्त लंड अपने मुंह में भर कर चूसने लगी। उषा भी चुपचाप खड़ी नहीं थी। वो अपनी मा के चूतड़ के तरफ़ बैठ कर उसकी चूत से अपना मुंह लगा दिया और अपनी मा कि चूत को चूसने लगी। रजनी जी अपने दामाद का मोटा लंड अपने मुंह में भर कर चूसने लगी और कभी कभी उसको अपने जीभ से चाटने लगी। लंड को चाटते हुए रजनी जी ने अपने दामाद से बोली- हाय ! रमेश, तुमहरा लंड तो बहुत मोटा और लम्बा है। पता नहीं उषा पहली बार कैसे इसको अपनी चूत में लिया होगा। चूत तो बिल्कुल फट गई होगी ? मेरे तो मुंह दर्द होने लगा इतना मोटा लंड चूसते चूसते। वैसे मुझे पता था कि तुमहरा लंड इतना शानदार है'

'कैसे ?' रमेश ने अपने सास कि चुची को दबाते हुए पूछा। तब रजनी जी बोली- कैसे क्या ? तुम जब मेरे घर में अपने शादी के बाद आये थे और रोज दोपहर और रात को उषा को नंगी



करके चोदते थे तो मैं खिड़की से झांका करती थी और तुम्हारी चुदाई देखा करती थी। उन दिनों से मैं जानती थी कि तुम्हारा लंड की साईज़ क्या है और तुम कैसे चूत चाटते हो और चोदते हो।' तब रमेश ने अपने सास कि चुची को मसलते हुए पूछा- क्या मांजी, आपके पति यानि मेरे ससुरजी का लंड इतना मोटा और लम्बा नहीं था ? 'नहीं, उषा के पापा का लंड इतना मोटा और लम्बा नहीं था, और उनमे सेक्स कि भावना बहुत ही कम थी। इसिलिये वो मुझको हफ़्ते में केवल एक-दो बार ही चोदते थे' रजनी जी ने बोली।

थोड़ी देर के रमेश अपनी सास को बिस्तर पर लेटा कर उसकी चूत से अपना मुंह लगा दिया और अपने जीभ से उसकी चूत को चाटना शुरू कर दिया। चूत में जैसे ही रमेश की जीभ घुसी तो रजनी जी अपनी कमर उचकते हुए बोली- उम्मम्म, अह्हह, ऊइ मा, राजा अभी छोड़ो ना क्यूं तड़पाते हो, मैं जल रही हूं, तुम्हारा लंड मुझे चूसना है। तुम्हारा लंड तो घोड़े जैसे है, मुझे डर लग रहा है जब तुम अन्दर मेरे चूत मैं डालोगे तो मेरी चूत तो फ़ट जायेगी। मेरी चूत का छेद बहुत छोटा है और ज्यादा चुदि भी नहीं है। आज तुम पहली बार मेरी चूत में अपन लंड डालने जा रहे हो। आराम से डालना और बड़े प्यार से मेरी चूत को चोदना'

तब रमेश ने अपना लंड अपनी सास कि चूत पर लगाते हुए बोला- कोई बात नहीं मांजी, आपकी चूत को जो भी कमी पहले थी अब उसको मैं पूरा करुंगा। मैं अब रोज़ आपकी और आपकी बेटी को एक ही बिस्तर पर लेटा कर अपन लोगो कि चूत चोदुंगा।'

यह सुनते ही उषा अपने मम्मी से बोली- मां अब तो तुम खुश हो ? अब से रोज़ तुम्हारा दामाद तुमको और मुझको नंगी करके हमारी चूत चोदेगा। हाँ, अगर तुम चाहो तो तुम अपनी गांड में भी अपने दामाद का लंड पिलवा सकती हो।' इतना कह कर उषा ने रमेश से बोली- मेरे प्यारे पति, अब क्यो देर कर रहे हो। जल्दी से अपना यह खड़ा लंड मेरी मां कि चूत में पेल दो और उनको तबियत के साथ खूब चोदो। देख नहीं रहे हो कि मेरी मा तुम्हारा



लंड अपनी चूत में पिलवाने के कितनी बेकरार है। लाओ मैं ही तुम्हारा लंड पकड़ कर पानी मा कि चूत में घुसेड़ देती हूँ- और उषा ने अपने हाथों से पकड़ कर रमेश का लंड उसके सास कि चूत पर लगा दिया। रमेश का लंड के चूत से लगते ही रजनी जी ने अपनी कमर हिलाना शुरू कर दिया और रमेश ने भी अपनी कमर हिला कर अपना लंड अपने सास कि चूत में डाल दिया। रजनी जी कि चूत अपने पति के देहान्त के बाद से चुदी नहीं थी और इसालिये बहुत टाईट थी और उसमे अपना लंड डालने में रमेश को बहुत मजा मिल रहा था। रजनी जी भी अपने दामाद का लंड अपनी चूत में पेलवा कर सातवें आसमान पर पहुंच गई थी और वो बड़बड़ा रही थी- आआअह ऊऊह आराम से डालो यार, मेरी चूत ज्यादा खुली हुई नहीं है। प्लीज, पूरा लंड मत डालो नहीं तो मेरी चूत फ़ट जायेगी, उई मा मर गई, ओह, आह, हन, मेरी चूत फ़ाड़ दो, हाँ, ज़ोर से, और ज़ोर से, राजा है मादरचोद रमेश आज मेरी चूत फाड़ दो आआअह आआह ऊऊह ज़ोर से डालो, और ज़ोर से डालो, आज जितना ज्यादा मेरी चूत के साथ खेल सकते हो खेलो, राजा यह लंड पूरा मुझे दे दो, मैं इस के बिना नहीं रह सकती हूँ, पूरा लंड डालो, उम्मम्म आआह आआह' उम्मम्म आआह चूत में गुड, उम्मम्म अह अह अह ओहूह ओह नो। मैं चूत खाज से मरी जा रही हूँ, मुझे जोर जोर से धक्के मार मार कर चोदो।' थोड़ी देर के बाद रजनी जी ने अपने दामाद को अपने चारों हाथ और पैर से बांध कर बोली- आआअह आआह उम्मम्म, चोदो मुझे ज़ोर से उम्मम्म, उफ़ मादरचोद बहुत मजा आ रहा है, प्लीज रुकना नहीं, ओह मुझे रगड़ कर चोदो, ज़ोर से चोदो, अपना लंड पूरा मुझ को दे दो, तुम जैसा कहोगे मैं वैसा ही करूंगी लेकिन मुझे और चोदो, तुम बहुत अच्छा चोदते हो, मुझे ही आज बहुत ज्यादा, चोदो भेनचोद तुम्हारा लंड तो तुम्हारे ससुर से भी बड़ा है, चोदो मुझे नहीं तो मैं मर जाऊँगी, अभी तो तुम ने मेरी गांड भी मारनी है।'

थोड़ी देर तक रजनी जी कि चूत चोदने के बाद रमेश ने अपनी सास से पूछा- मा जी मेरी चुदाई आप को कैसी लग रही है ?' रजनी अपने दामाद कि लंड के धक्के अपने चूत से खाती हुई बोली- मेरे प्यारे दामाद जी बहुत अच्छा लग रहा है। मुझे तुम्हारी चुदाई बहुत



अच्छी लग रही है। तुम चूत चोदने में बहुत ही माहिर हो। बड़ा मजा आ रहा है मुझे तुमसे चुदवाने में डियर ऊओह्हह्ह डियर तुम बहुत अच्छा चोदते हो आआह्हह ऊऊह्हह्हह्हह ऊऊओफ़फ़ फुद्दी मारी यू आर एन एक्सपर्ट। तुम्हे मालूम है कि कैसे किसी औरत कि चूत की चुदाई की जाती है और तुम्हे यह भी मालूम है कि एक औरत को कैसे कैसे सुख दिया जा सकता है। यूं ही हाँ डियर यूं ही चोदो मुझे...बस चोदते जाओ मुझे अब कुछ नहीं पूछो आज जी भर के चोदो मुझे डियर हाँ डियर जम कर चुदाई करो मेरी तुम बहुत अच्छे हो बस यूं ही चुदाई करो मेरी...ऊऊह्हह्हह...।। खूब चोदो मुझे...’ और रमेश अपनी सास को अपनी पूरी ताकत के साथ चोदता रहा।

रमेश अपनी सास कि बात सुन सुन कर बहुत उत्तेजित हो गया और जोर जोर से अपने सास कि चूत में अपना लंड पेलने लगा। थोड़ी देर के बाद रमेश को लगा कि अब वो झड़ने वाला है तो उसने अपनी सास से बोली- सासुमा मैं झड़ने जा रहा हूँ।’ तो रजनी जी बोली- राजा, प्लीज मेरी चूत के अन्दर ही झड़ो’ और रमेश अपना लंड पूरा का पूरा अपनी सास की चूत में लंड ठांस कर लंड कि पिचकरी छोड़ दिया। थोड़ी देर के बाद रजनी जी भी बिसतर पर से उठ खड़ी हुई और सीधे बाथरूम में जा कर घुस गई। थोड़ी देर के बाद अपनी चूत धो धा कर रजनी जी फिर से कमरे घुसी और मुसकुरा कर अपने दामाद से बोली- हाय ! मेरे राजा आज तो तुमने कमाल ही कर दिया। तुम तो सिर्फ एक झड़े लेकिन मैं तुम्हारी चुदाई से तीन बार झड़ी हूँ। इतनी जोरदार चुदाई मैंने कभी नहीं की। मेरी चूत तो अब दुख रही है।’

तभी उषा, जो कि अपने पति और अपने मा की चुदाई देख रही थी, बोली- मा अपने दामाद का लंड अपनी चूत में पिलवा कर मजा आया ? मेरी शादी की पहली रात तो मैं बिल्कुल मर सी गई थी और अब इस लंड से बिना चुदवा कर मेरी तो रात को नीद ही नहीं आती। मैं रोज़ कम से कम एक बार इस मोटा तगड़ा लंड से अपनी चूत जरूर चुदवती हूँ या अपनी गांड मरवाती हूँ।’ तभी रमेश ने अपने सास को अपने बाहों में भर कर बोला- मां जी, एक



बार और हो जाये आपकी चूत की चुदाई। मैं जब कम से कम दो या तीन बार नहीं चोद लेता हूँ मेरा मन ही नहीं भरता है।' रजनी जी बोली- अरे थोड़ा रुको, मेरी चूत तुम्हारी चुदाई से तो अब तक कुलबुला रही है। अब तुम एक बार उषा कि चूत चोद डालो।'

'नहीं मां जी, मैं तो इस वक्त आपकी चूत या गांड में अपना पेलना चाहता हूँ। आपकी लड़की कि चूत तो मैं रोज़ रात को चोदता हूँ, मुझे तो इस समय आपकी चूत या गांड चोदने की इच्छा है।' तब उषा अपने मा से बोली- मा चुदवा ना लो और एक बार। अगर चूत बहुत ही कुलबुला रही है तो अपने गांड में ले लो अपने दामाद का लंड। कसम से बहुत मजा मिलेगा।'

तब रजनी जी बोली- ठीक है, जब तुम दोनों कि यही इच्छा है, तो यह लो मैं एक बार फिर से चुदवा लेती हूँ। लेकिन इस बार मैं गांड में रमेश का लंड लेना चाहती हूँ। और दो मिनट रुक जओ, मुझे बहुत प्यास लगी है मैं अभी पानी पी कर आती हूँ।' तब उषा अपने मा से बोली- अरे मां, रमेश का लंड बहुत देर से खड़े है और आप पानी पीने जा रही हो? इन बिस्तर पर लेटो मैं तुम्हारी प्यास अपनी मूत से बुझा देती हूँ।'

इतना सुनते ही रजनी जी बोली- ठीक है ला अपना मूत ही मुझे पिला मैं प्यास से मरी जा रही हूँ और वो बिसतर पर लेट गई। मा को बिस्तर पर लेटा देख कर उषा भी बिस्तर पर चढ गई और अपने दोनों पैर मां के सर के दोनों तरह करके बैठ गई और अपनी चूत रजनी जी के मुंह से भिड़ा दिया। रजनी जी भी अपनी मुंह खोल दिया। मुंह खुलते ही उषा ने पिशाब कि धार अपने मा कि मुंह पर छोड़ दिया और रजनी जी अपनी बेटी की मूत बड़े चाव से पीने लगी। पिशाब पूरा होने पर उषा अपने मा के ऊपर से उठ खड़ी हो गई और रजनी जी के बगल में जा कर बैठ गई। तब रमेश ने अपने सास के बाहों को पकड़ कर उनको बिस्तर पर उल्टा लेटा दिया और उनकी कमर को पकड़ कर उनके चूतड़ को उपर कर दिया। जैसे रजनी जी घोड़ी सी बन कर बिस्तर पर आसन लिया तो रमेश अपने मुंह से



थोड़ा सा थूक निकल कर अपने सास कि गांड में लगा दिया और अपना लंड को अपने हाथों से पकड़ कर अपनी सास कि गांड कि छेद में लगा दिया। रजनी जी तब अपने हाथों से अपनी बेटी कि चुची को मसलते हुए बोली- रमेश मेरे राजा, मैंने आज तक कभी गांड नहीं चुदवाई है और मुझको पता है कि गांड मरवाने में पहले बहुत दर्द होता है। इसलिये तुम आराम से मेरी गांड में अपन लंड डालना। जैसे ही रमेश ने जोर लगा कर अपना लंड का सुपारा अपनी सास की गांड में घुसेड़ा तो रजनी जी चिल्ला उठी- आआह ऊऊह आआह क्या कर रहा हो, मैं मार जाऊँगी, राजा तुम तो मेरी गान्ड फ़ाड़ कर रख दोगे, मैंने पेहले कभी गांड नहीं मरवाई है प्लीज़ मेरे लल्ला आहिस्ता से करो।' अपनी मा को चिल्लाते देख उषा ने रमेश से बोली- क्या कर रहे हो, धीरे धीरे आराम से पेलो ना अपना लंड। देख नहीं रहे हो मेरी मां मरी जा रही है। मां कोई भागी थोड़ी ना जा रही है।'।

रमेश इतना सुन कर अपनी बीवी से बोली- क्यों चिन्ता कर रही हो। तुमको अपनी बात याद नहीं। जब मैंने पहली बार अपना लंड तुम्हारी गांड में पेला था तो तुम कितना चिल्लाई थी और बाद तुम्ही मुझसे बोल रही थी, और जोर से पेलो, पेलो जितना ताकत है फ़ाड़ दो मेरी गांड, मुझको बहुत मजा मिल रहा है और मैं तो अब से रोज तुमसे अपनी गांड में लंड पिलवाऊँगी।' उषा अपने पति कि बात सुन कर अपनी मा से बोली- मा थोड़ा सा सबर करो। अभी तुम्हारी गांड का दर्द खतम हो जयेगा और तुमको बहुत मजा मिलेगा। रमेश जैसा लंड पेल रहा है उसको पेलने दो।'।

तब रजनी जी बोली- वो तो ठीक है, लेकिन अभी तो लग रहा था कि मेरी गांड फटी जा रही है, और मुझको अब पिशाब भी करना है।' रमेश अपनी सास कि बात सुन कर उषा से बोला- उषा तुम जलदी से किचन में से एक जग लेकर आओ और उसको अपनी मां की चूत के नीचे पकड़ो।' उषा जल्दी से किचन में से एक जग उठा कर लाई और उसको अपनी मां की चूत के नीचे रख कर मां से बोली- लो अब मूतो, मेरी प्यारी मां। तुम भी मां एक अजीब ही हो। उधर तुमहरा दामाद अपना लंड तुम्हारे गांड में घुसेड़ रखा है और तुमको पिशाब



करनी है।' रजनी जी कुछ नहीं बोली और अपने एक हाथ से जग को अपनी चूत के ठीक नीचे लकर चर चर करके मूतने लगी। राजनी को वाकई ही बहुत पिशाब लगी थी क्योंकि जग करीब करीब पूरा का पूरा भर गया था।

जब रजनी जी का पिशाब रुक गया तो उषा ने जग हटा लिया और जग को उठा कर अपने मुंह से लगा कर अपनी मां की पिशाब पीने लगी। यह देख कर रमेश रजनी जी से बोला- अरे क्या कर रही हो, थोड़ा मेरे लिये भी छोड़ देना। मुझको भी अपने सेक्सी सास कि चूत से निकला हुआ मूत पीना है।' उषा तब बोली- चिंता मत करो, मैं तुम्हारे लिये आधा जग छोड़ देती हूँ।'

थोड़ी देर के बाद रजनी जी अपने दामाद से बोली- बेटा मैं फिर से तैयार हूँ, तुम मुझे आज एक रण्डी की तरह चोदो। मेरी गांड फ़ाड़ दो। मैं बहुत ही गर्म हो गई हूँ। मेरी गांड भी मेरी चूत कि तरह बिल्कुल प्यासी है।' 'अभी लो मेरी सेक्सी सासुमा, मैं अभी तुम्हारी गांड अपने लंड के चोटों से फ़ाड़ता हूँ' और यह कह कर रमेश ने अपना लंड फिर से अपने सास कि गांड में पेल दिया। गांड में लंड घुसते ही रजनी जी फिर जोर से चिल्लने लगी- हाय! फ़ाड़ डाला रे मेरी गांड, फ़ाड़ डाला रे। अरे कोई मुझे बचाओ रे, मेरी दामाद और मेरी बेटी दोनों मिल कर मेरी गांड फड़वा डाला।' तब उषा अपने मा से बोली- अरे मा क्यों एक छिनाल रण्डी की तरह चिल्ला रही हो, चुप हो जाओ और चुपचाप अपने दामाद से अपनी गांड में लंड पिलवाती रहो। थोड़ी देर के बाद तुमको बहुत मजा मिलेगा।' अपनी बेटी कि बात सुन कर रजनी जी चुप हो गई लेकिन फिर भी उसकी मुंह से तरह तरह की आवाजे निकल रही थी।

'आआह्हहह... यययौऊ... ऊऊउफ़फ़... ईईइस्सा स्सास्सह्हहह... ऊऊओह्हह... यययौउ... ऊऊफ़फ़... यह... लंड बहुत मोटा और लम्बा है। ऊऊओमम्मा आआह्हहह... है! मैं मरी जा रही हूँ। ऊऊउह्हहहहह... प्लीऽऽस्सासे... आआअ... ऊऊफ़फ़... धीरे...



जरा धीरे पेलो मैं मरी जा रही हूँ। अरे बेटी, अपने पति से बोल ना कि वो जरा मेरी गांड में अपना लंड धीरे धीरे पेले। मुझे तो लग रहा कि मेरी चूत और गांड दोनों एक हो जायेंगी। थोड़ी देर के बाद रमेश अपना हाथ अपने सास के सामने ले जकर उनकी चूत को सहलाने लगा और फिर अपनी अंगुलियों से उनकी चूत की घुण्डी को पकड़ कर मसलने लगा। अपनी चूत पर रमेश का हाथ पड़ते ही रजनी जी बिलबिला उठी और अपनी कमर हिला हिला कर रमेश के लंड पर ठोकर मारने लगी।

यह देख कर रमेश ने उषा से कह- देख तेरी रण्डी मां कैसे अपनी कमर चला कर मेरे लंड को अपने गांड में पिलवा रही है। क्या तुम्हारी यही मां अभी थोड़ी देर पहले अपनी गांड मरवाने पर नहीं चिल्ला रही थी? यह सुन कर उषा बोली- ओहूह रमेश! क्या बात है! देखो मेरी मां क्या मजे से अपनी गांड से तुम्हारा लंड खा रही है। देखो मेरी मां कैसे गांड मरवा रही है। मारो, मारो रमेश, मेरी मां कि गांड में अपना लंड खूब जोर जोर से पेलो। इसके पूरे बदन में लंड के लिये खुजली भरी पड़ी है। चोदो रमेश साली कि गांड मारो बड़ी खुजली हो रही थी!

रजनी जी अपनी गांड में दामाद का लंड पिलवा कर सातवे आसमन पर थी और बड़बड़ा रही थी- ओहूहहह! देखो उषा मेरी बेटी! तुम्हारी मां गांड में लंड लेकर चुदवा रही है! तुम आखिर अपने मरद से मेरी चूत, गांड चोदवा ही दी! देखो साला रमेश कैसे चोद रहा है! साला सच्चा मरद है! डाल और डाल रे! चोद! मेरी गांड मार! मेरे बेटी को दिखा! आहूहह ऊहूहहह चोद चोद चोद ऐईइ!

रमेश अपनी बीवी और अपनी सास की बात सुनता जा रहा था और अपनी कमर चला चला कर अपनी सास की गांड में अपना लंड पेलता रहा। थोड़ी देर तक रजनी जी कि गांड मारने के बाद रमेश एक बार जोर से अपना पूरा का पूरा लंड रजनी जी कि गांड घुसेड़ दिया और रजनी जी को जोर से अपने हाथों से जकड़ कर अपना लंड का पानी अपने सास कि



गांड ने छोड़ दिया । झड़ने के बाद रमेश ने अपना लंड अपने सास की गांड से बाहर निकाल लिया ।

उषा ने अपनी मां को प्यार से गले लगा लिया । रमेश ने भी अपनी सासू मां के चरण स्पर्श किया और फिर तीनों साथ ही एक ही बिस्तर पर ये वादा करके लेट गये कि अब पूरे घर में ऐसा ही प्यार भरा माहौल बना रहे ।



Other stories you may be interested in

छोटे भाई की बीवी यानि भाभी की चुदाई-2

अब तक आपने पढ़ा.. मैंने रोशनी की चुदास को समझने के लिए नंगा लेटने का नाटक किया और रोशनी की चुदास को समझ लिया। वो मेरे लंड को सूंघने लगी थी और उसी वक्त मैंने उसे पकड़ लिया था। अब [...]

[Full Story >>>](#)

मैंने ससुर जी से चूत चुदवा ली

मैं सोच भी नहीं सकती थी कि सीधे से दिखने वाले मेरे ससुरजी इतने ठकीं और इतने शानदार मर्द निकलेंगे, और जो सुख मुझे मेरे पतिदेव न दे पाये वो सब सुख मुझे मेरे ससुरजी उर्फ पिताजी देंगे। दोस्तो, मेरा [...]

[Full Story >>>](#)

अनोखी चूत चुदाई के बाद-5

बहू ससुर की चूत चुदाई के बाद बहुत देर तक हम दोनों बाहों में बाहें डाले चिपके लेटे रहे। बहू रानी के नंगे गर्म बदन की छुअन कितनी सुखद लग रही थी, उसे शब्दों में बताना मेरे लिए सम्भव नहीं [...]

[Full Story >>>](#)

अनोखी चूत चुदाई के बाद-4

'योनि नहीं, कोई दूसरा नाम बताओ इसका, तभी घुसाऊंगा लंड!' मैंने उसे और तंग किया फिर उसके भगांकुर को होंठों में लेकर चुभलाने लगा। 'उफफ पापा जी, आप और कितना बेशर्म बनाओगे मुझे आज... लो मेरी चूत में पेल दो [...]

[Full Story >>>](#)

अनोखी चूत चुदाई के बाद-3

टाइम ग्यारह से ज्यादा हो गया, मैं ऊपर वाली कोठरी में जाकर लेट गया। 'अदिति आएगी?' यह प्रश्न मन में उठा, साथ में मैंने अपनी चड्डी में हाथ घुसा कर लंड को सहलाया। 'जरूर आयेगी... जब उसे कल की चुदाई [...]

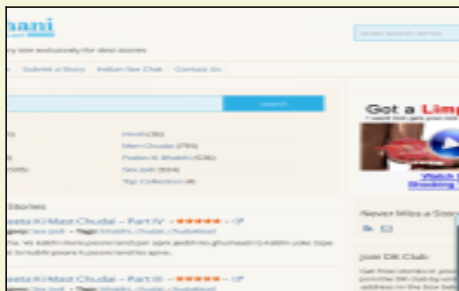
[Full Story >>>](#)





Other sites in IPE

Desi Kahani



India's first ever sex story site exclusively for desi stories. More than 3,000 stories. Daily updated.

Velamma



Vela as her loved ones like to call her is a loving and innocent South Indian Aunty. However like most of the woman in her family, she was blessed with an extremely sexy figure with boobs like they came from heaven! Visit the website and check the first 3 episodes for free.

Indian Sex Stories



The biggest Indian sex story site with more than 40 000 user submitted sex stories. Go and check it out. We have a story for everyone.

Indian Phone Sex



Real desi phone sex, real desi girls, real sexy aunty, sexy malu, sex chat in all indian languages

FSI Blog



Every day FSIBlog.com brings you the hottest freshly leaked MMS videos from India.

Suck Sex



Suck Sex is the Biggest & most complete Indian Sex Magazine for Indian Sex stories, porn videos and sex photos. You will find the real desi actions in our Indian tubes, lusty stories are for your entertainment and high resolution pictures for the near vision of the sex action. Watch out for desi girls, aunts, scandals and more and IT IS ABOLUTELY FREE!